छोटी माता जानलेवा नहीं - जागरूकता ज़रूरी

मनीष वैद्य

समूचे मालवा और निमाड़ अंचल में इन दिनों छोटी माता (चिकन पॉक्स) बीमारी का प्रकोप बढ़ता जा रहा है। हालांकि यह बीमारी जानलेवा नहीं है, किन्तु पहुंच विहीन गांवों में अशिक्षा व जागरूकता के अभाव या अंधविश्वास के चलते कोई इलाज नहीं कराता। या फिर समय पर समुचित चिकित्सा व्यवस्था उपलब्ध नहीं हो पाती। यही कारण है कि इससे बच्चों की मृत्यु तक हो जाती है। क्षेत्र के झाबुआ, धार, खरगोन आदि ज़िलों में इससे कई बच्चे मारे गए हैं।

प्रायः दिसम्बर के अंतिम सप्ताह से लेकर मार्च के अंतिम सप्ताह तक यह बीमारी होती है। इसे लेकर ग्रामीण अंचलों में कई तरह की भ्रांतियां हैं। कुछ भ्रांतियां या अंधविश्वास तो इतने दुःखद और खतरनाक हैं कि इससे पीड़ित बच्चे की मृत्यु तक हो सकती है। गांव के लोग इसे देवी प्रकोप मानकर छोटी माता के नाम से जानते हैं। विडम्बना ही है कि जहां एक और हम विज्ञान के नित नए आविष्कारों के बारे में देख-सुन रहे हैं वहीं ग्रामीण इस बीमारी से पीड़ित बच्चों का इलाज नहीं कराते।

वे इसके लिए शीतला माता का पूजन करते हैं। उनका मानना है कि इससे माता शांत हो जाती हैं व बीमारी ठीक हो जाती है। पीड़ित बच्चे की दोनों समय आरती करते हैं; बच्चे की मां शीतला माता के ओटले पर जाकर पानी चढ़ाती हैं। कई जगह तो मांएं ज़मीन पर लोटते हुए मंदिर पहुंचती हैं। जहां माता का विधि-विधान से पूजन किया जाता है। गोली दवाई देना पूरी तरह से बंद रहता है। लोगों की मान्यता है कि दवा देने से प्रकोप और बढ़ जाएगा। कुछ गांवों में होली जलाने वाली जगह पर भी पानी चढ़ाया जाता है ताकि माता का प्रकोप शांत हो सके। लगभग पूरे अंचल में छोटी माता निकलने पर झाड़ फूंक व डोरे, गंडे, ताबीज़ का प्रचलन है। इलाज के नाम पर ओझा और पण्डे अच्छी खासी वसूली करते हैं।

आम तौर पर ग्रामीण पीड़ित बच्चों को घर से बाहर नहीं

निकलने देते। गांव की अन्य महिलाओं व शराबी, मांसाहारियों की छाया भी बच्चों पर नहीं पड़ने देते। बच्चों को इस बीच नहलाया भी नहीं जाता। अधिकांश घरों में बच्चे के माता-पिता बघारा खाना नहीं खाते हैं। साथ ही बाटी या ऐसी दूसरी चीज़ें नहीं बनाई जाती हैं जो शीतला माता को पसंद नहीं हैं। कुछ गांव में शीतला माता को धानक से उतारी हुई नीम की डाली या घी भी लाते हैं। नीम की डाली को मुख्य दरवाज़े के कुंदे पर बांधा जाता है और घी बच्चे के शरीर पर लगाया जाता है।

ज़िले में शिक्षा और विकास के मुद्दों पर लंबे समय से काम कर रही एकलव्य संस्था में काम कर चुके संदीप नाईक कहते हैं, "छोटी माता बीमारी में गांव के लोगों की ये भ्रांतियां दुर्भाग्यपूर्ण है। वस्तुतः ठंडाई से रोगी को कुछ देर के लिए आराम मिलता है, इसी कारण गांवों में लोगों ने इसे शीतला माता से जोड़ दिया है। प्रशासन को ऐसी भ्रांतियां दूर करने के लिए अपने अमले का उपयोग करना चाहिए।"

इस रोग के संदर्भ में शिशु रोग विशेषज्ञ मानते हैं कि